DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
साहित्यदर्पण
काव्य प्रयोजन एवं काव्य लक्षण
Part -2
LIVE
13-05-2024 02:00 PM

काव्य एवं काव्य प्रयोजन

काव्य कवि विशेष की भावनाओं का चित्रण है और यह चित्रण इतना ठीक है कि उसके जैसी ही भावनाएँ दूसरे के हृदय में आविर्भूत हो जाती है। पदों के स्थापना अथवा वर्णन मात्र से ही जो मन को चुरा ले अर्थात् मन को मोहित कर ले वही काव्य है ।

वस्तुतः कवि का कर्म ही काव्य कहलाता है। किसी विषय का चमत्कृतिपूर्ण श्रोताओं को मुग्ध कर देने वाला वर्णन ही कवि का कर्म है, काव्य है। जिस किसी विषय का चमत्कारी, श्रोतृजनहृदयहारी वर्णन जिन शब्दों के द्वारा किया जाता है, वे शब्द ही काव्य हैं। इस प्रकार चमत्कारी वर्णन में जो निपुण हो वह कवि तथा उसका कर्म काव्य कहलाता है। शब्द और अर्थ दोनों ही काव्य हैं । कवि की कर्मता सर्वप्रथम अर्थ में, उसके अनुसार ही शब्द के गुम्फन में जब हो जाती है तब वह काव्य कहलाता है काव्य तो भावनाओं की आधारशिला है, इसी आधारशिला पर ही कवि का साम्राज्य स्थापित होता है ।

काव्य की परिभाषा के उपरान्त काव्य के प्रयोजन के बारे में विमर्श करना परमावश्यक है । काव्य लिखने का अथवा सुनने का प्रयोजन क्या है, काव्य सुनने अथवा पढ़ने से क्या लाभ होता है? काव्य को सुनना सामान्य जन के लिए उसमें उसको अपना अभीष्ट अथवा जो वह चाहता है, वह दिखाई दे । मनुष्य यह कार्य मेरे लिए हितकर अथवा मेरे लिए अभीष्ट का साधन है और मैं इस कार्य को भली-भाँति कर सकता हूँ, इस प्रकार का ज्ञान होने पर ही मनुष्य किसी कार्य में प्रवृत्त होता है । यह अनुबन्धचतुष्टय के नाम से शास्त्र में प्रसिद्ध है । इसमें अधिकारी, विषय, सम्बन्ध तथा प्रयोजन में चार अंश है । "अधिकारी" इससे यह ज्ञात होता है कि किसी भी कार्य को करने का अधिकारी कौन है अर्थात् कौन यह कार्य कर सकता है? विषय का अर्थ है - सम्बन्धित कार्य का विषय क्या है? सम्बन्ध का अर्थ है- इस कार्य का किसी अन्य कार्य से क्या सम्बन्ध है, प्रयोजन का अर्थ है - इसका प्रयोजन अर्थात् फल क्या है ? 'इदं मदिष्टसाधनम्' इस वाक्य में "इदम् " पद विषय, "मत्" पद अधिकारी " इष्ट" पद प्रयोजन तथा "साधनम्" पद सम्बन्ध का द्योतक है ।

वस्तुतः अलौकिक आनन्दानुभूति ही काव्य का परम प्रयोजन है। इस आनन्दानुभूति में पाठक अथवा श्रोता सांसारिक सुख दुःख इत्यादि को विस्तृत कर काव्य-संसार में तल्लीन हो जाता है । इस तन्मयता में ही उसे अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती है । इस अलौकिक आनन्दानुभूति का बीज है- सहयहृदय होना । जब तक सहृदयता नहीं है तब तक आनन्दानुभूति की अनुभूति सम्भव नहीं है ।

साहित्यदर्पण के अनुसार काव्य-प्रयोजन

प्रत्येक कार्य का कोई न कोई प्रयोजन अवश्य होता है। बिना प्रयोजन के तो अल्प बुद्धि वाला मनुष्य भी किसी कार्य में प्रवृत्त नहीं होता है अतः कहते हैं

"प्रयोजनमनुद्दिश्य मन्दोऽपि न प्रवर्तते" ।

वस्तुतः काव्य के प्रयोजन का उल्लेख जनसामान्य को काव्य के निर्माण और अध्ययन तथा अध्यापन में प्रवृत्त कराने के लिए एक रोचक उपाय है। जैसे सीपी के चमकीले टुकड़ों को मोती के रूप में बेचने वाले विक्रेता क्रेताओं से यह कहते है- "बड़े अच्छे मोती हैं, जरूर खरीद लीजिए" काव्य का प्रयोजन भी रसास्वादमूलक आनन्दातिशय ही है । यद्यपि कीर्ति, व्यवहार का ज्ञान, अर्थोपार्जन तथा अमंगल - विनाश इत्यादि बहुत सारे काव्य के प्रयोजन हैं फिर भी रसास्वादन ही काव्य का प्रमुख प्रयोजन है, यद्यपि कीर्ति इत्यादि काव्य के गौण प्रयोजनों को प्राप्त करने के अन्य साधन भी हैं तथापि रसास्वाद जैसे परम प्रयोजन को प्राप्त करने का एकमात्र एवं सरल साधन काव्य ही है।

काव्य-प्रयोजन-

अस्य ग्रन्थरस्य काव्याङ्गतया काव्यफलैरेव फलवत्त्वमिति काव्यफलान्याह -

चतुर्वर्गफलप्राप्तिः सुखादल्पधियामपि ।
काव्यादेव यतस्तेन तत्स्वरूपं निरूप्यते ।

धर्म अर्थ काम मोक्ष

इस ग्रन्थ अर्थात् साहित्यदर्पण के काव्य का अंग होने के कारण काव्य फल से ही इस ग्रन्थ की फलवत्ता है अतः काव्य के फलों अर्थात् प्रयोजन को बताते हैं । जैसे किसी वृक्ष का वृक्षत्व तभी सार्थक अर्थात् फलवान् है जब उसमें फल लगे हों। वैसे ही साहित्यदर्पण नामक ग्रन्थ एक वृक्ष विशेष है, इसकी शाखाएँ काव्य हैं, जैसे शखाओं के होने से वृक्ष का अस्तित्व है, वैसे ही काव्य के फल से ही इस ग्रन्थ की सफलता सिद्ध है ।

अर्थात् काव्य से सुकुमार बुद्धि से युक्त लोगों को भी धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष इन चार पुरुषार्थों के फल की प्राप्ति हो जाती है। काव्य से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष के फल की प्राप्ति होती है । काव्य के पढ़ने अथवा सुनने से अनायास ही अर्थात् सरलता से ही जिनकी बुद्धि अल्प है उनको भी चारों पुरुषार्थों की प्राप्ति हो जाती है ।

वस्तुतः धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष ये चार वर्ग कहलाते है, यही पुरुषार्थ चतुष्टय कहलाते हैं। जो परिपक्व बुद्धि से युक्त है अर्थात् शास्त्रादि ज्ञान में निपुण है ऐसे व्यक्तियों को भी सहजता और सरलता से पुरुषार्थचतुष्टय के फल की प्राप्ति जिससे हो वही काव्य का मुख्य प्रयोजन है ।

चतुर्वर्गफलप्राप्तिर्हि काव्यतो "रामादिवत्प्रवर्तितव्यं न रावणादिवत्' इत्यादि कृत्याकृ त्यप्रवृत्तिनिवृत्त्युपदेषद्वारेण सुप्रतीतैव ।

उक्तं च (भामहेन) -

"धर्मार्थकाममोक्षेसु वैचक्षण्यं कलासु च ।
करोति कीर्तिं प्रीतिं च साधुकाव्यनिबन्धनम्" ।। इति

चार वर्गों के फल की प्राप्ति काव्य से "राम की तरह व्यवहार करो, रावण आदि की तरह नहीं इस उपदेश के कृत्य अर्थात् धर्मदिरूप कर्त्तव्य कर्म में प्रवृत्ति और अकृत्य अर्थात् अधर्मादिरूप अकर्त्तव्य अकर्म की ओर से निवृत्ति इस उपदेश के द्वारा सर्वविदित है ।

वस्तुतः काव्य धर्म का ही उपदेश देता है अधर्म का नहीं। जैसे राम ने पिता की आज्ञा को शिरोधार्य किया और वन में गये तथा रावण ने राम की स्त्री सीता का अपहरण करके "परदारापहरण" जैसा महापातक किया । धर्म के रास्ते पर चलने वालों की हमेशा विजय होती है और अधर्म के रास्ते पर चलने वालों की हमेशा पराजय | धर्म से ही राम का अभ्युदय हुआ, अधर्म से रावण का अनभ्युदय हुआ अतः काव्य हमेशा धर्म की ही शिक्षा प्रदान करता है ।

धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति जब काव्य से सम्भव है तो वेद-शास्त्रों को पढ़ने से क्या लाभ है? वेद-शास्त्र तो कठिन हैं जबकि काव्य तो सरल एवं सरस है तो कोई फिर कोई वेद-शास्त्रों का अध्ययन क्यों करेगा? इस प्रश्न का समाधान करते है-

चतुर्वर्गप्राप्तिर्हि वेदशास्त्रेभ्यो नीरसतया दुःखादेव परिणतबुद्धीनामेव जायते ।
परमानन्दसन्दोहजनकतया सुखादेव सुकुमारबुद्धीनामपि पुनः काव्यादेव ।

चतुर्वर्ग की प्राप्ति अर्थात् धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष की प्राप्ति वेद-शास्त्रों से नीरस रूप दुःख से अर्थात् अत्यन्त प्रयत्न से परिणत बुद्धि वालों (प्रतिभासम्पन्न व्यक्तियों) को होती है । वेद-शास्त्रों का अध्ययन अत्यन्त प्रयत्न से सम्भव है, वे सरस न होकर नीरस हैं अर्थात् उनमें कोई रस नहीं है, ऐसे वेद-शास्त्रों से पुरुषार्थ-चतुष्टय की प्राप्ति प्रौढ़ बुद्धि से युक्त लोगों को होती है ।

परमानन्द के समूह को उत्पन्न करने का जो कारण है काव्य, उसके द्वारा सुख से ही अर्थात् अनायास ही सुकुमारबुद्धि से युक्त लोगों को चतुर्वर्ग की प्राप्ति हो जाती है अर्थात् काव्य तो परमानन्द का भण्डार है। कोमल बुद्धि वालों को सहज रूप में ही काव्य को पढ़ने अथवा सुनने से धर्म, अर्थ काम तथा मोक्ष की प्राप्ति हो जाया करती है ।

वस्तुतः चतुर्वर्ग की प्राप्ति वेद-शास्त्र तथा काव्य इन दोनों से ही होती है परन्तु दोनों की प्राप्ति का क्रम एवं साधन पृथक्-पृथक् है ।

1. वेदादि शास्त्रों से नीरस रूप में दुःख अर्थात् कष्ट से परिपक्व बुद्धि वालों को चतुर्वर्ग की प्राप्ति ।

2. काव्य से सरस रूप में सुख अर्थात् सहज रूप से सुकुमार मति वालों को चतुर्वर्ग की प्राप्ति ।

सुकुमार अर्थात् कोमल अथवा भोले-भाले लोगों के लिए काव्य ही एकमात्र चतुर्वर्ग की प्राप्ति का साधन हैं क्योंकि वे वेदादि शास्त्रों का अध्ययन करने में समर्थ नहीं है ।

ननु तर्हि परिणतबुद्धिभिः सत्सु वेदशास्त्रेषु किमिति काव्ये यत्नः करणीय इत्यापि न वक्तव्यम् । कटुकौषधोपशमनीयस्य रोगस्य सितशर्करोपशमनीयत्वे कस्य वा रोगिणः सितशर्कराप्रवृत्तिः साधीयसी न स्यात् ?

"तो फिर परिपक्क बुद्धि वालों को वेद-शास्त्रों के अतिरिक्त काव्य पढ़ने अथवा सुनने का प्रयास नहीं करना चाहिए क्योंकि उनको तो वेद-शास्त्रों को पढ़ने अथवा सुनने से धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष इन चार पुरुषार्थों की प्राप्ति तो हो ही रही है" यह कहना भी युक्तिसंगत नहीं है अर्थात् ऐसा कहना ठीक नहीं है क्योंकि कड़वी दवाई से ठीक होने वाला रोग यदि मीठी शक्कर से ठीक हो जाए तो फिर सभी लोग सभी रोगी उस मीठी शक्कर का सेवन नहीं करेंगे? अर्थात् निश्चित रूप से करेंगे। इस प्रकार कड़वी दवाई तो वेद-शास्त्रों का अध्ययन करना है और मीठी शक्कर है काव्य का आस्वादन ।

अतः परिपक्व बुद्धि वाले लोग भी वेदादि शास्त्रों को छोड़कर काव्य के रसास्वादन में तत्पर हो जाते हैं।

अतः काव्य चतुर्वर्ग की प्राप्ति का सरल एवं सुगम साधन है ।

अब काव्य के प्रयोजन की प्रमाणिकता सिद्ध करते हैं

किञ्च काव्यस्योपादेयत्वमग्निपुराणेऽप्युक्तम् -

नरत्वं दुर्लभं लोके विद्या तत्र सुदुर्लभा ।
कवित्वं दुर्लभं तत्र शक्तिस्तत्र सुदुर्लभा ।।

काव्य की उपादेयता अर्थात् उपयोगिता अथवा महत्त्व अग्निपुराण में इस प्रकार कहा गया है ।

इस संसार में नरत्व अर्थात् मनुष्यत्व दुर्लभ है, इससे भी दुर्लभ है, विद्या प्राप्त करना, उससे भी दुर्लभ है, कवित्व और उससे भी दुर्लभ है, कवित्व शक्ति अर्थात् सबसे दुर्लभ कवित्व शक्ति है । काव्य की रचना करना अत्यन्त दुर्लभ है। काव्य करने की शक्ति हर किसी में नहीं होती है । यह तो ईश्वर की कृपा ही है जो हर किसी को नहीं मिलती है।

6. दसवीं शताब्दी में के आचार्य मम्मट ने "काव्यप्रकाश" नामक अपने ग्रन्थ में काव्य- प्रयोजन इस प्रकार लिखा है

काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये ।
सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे ।।

काव्य यश का जनक, अर्थ का उत्पादक, व्यवहार का बोधक, अमगंल का नाशक, पढ़ने, सुनने, अथवा देखे जाने पर तुरन्त परमानन्द को देने वाला तथा स्त्री के समान सरस उपदेश प्रदान करने वाला होता है।

7. आचार्य हेमचन्द्र ने "काव्यानुशासन' नामक अपने ग्रन्थ में काव्य प्रयोजन इस प्रकार बतलाया है-

"काव्यमानन्दाय यशसे कान्तातुल्यतयोपदेशाय च" ।

काव्य आनन्द, यश तथा स्त्री के समान सरस उपदेश प्रदान करने वाला होता है ।

3

8. पण्डितराज जगन्नाथ ने "रसगंगाधर" नामक अपने ग्रन्थ में काव्य का प्रयोजन इस प्रकार लिखा है-

" तत्र कीर्ति - परमाह्लाद - गुरुराजदेवताप्रसादादि अनेकविध काव्यस्य प्रयोजकस्य इति ।

- कीर्ति, परमानन्द, गुरु, राजा तथा देवता आदि की कृपा ये सभी काव्य के प्रयोजन हैं
- इस प्रकार विभिन्न काव्य प्रयोजनों का मूल सार यही है कि अमंगल का विनाश तथा यश के लिए काव्य की रचना की जाती है, अन्य सभी प्रयोजन इन दो प्रयोजनों के उपरान्त गौण प्रयोजन हैं।